अमृत वाणी

हमारे हृदय का पागलपन ही घृणा है।

– बायरन

ऐसी सख्ती सर्वत्र जरुरी

नगर निगम के आयुक्त हरेश मंडावी ने हाल ही में शहीद पार्क तिराहा में बन रहे पुल का निरीक्षण करने के दौरान संबंधित अधिकारियों एवं ठेकेदार को निर्माण कार्य में गुणवत्ता बनाए रखने एवं अनावश्यक लेट लतीफी से बाज आने संबंधी जिस तरह की सख्ती दर्शाई आज उसकी हर शासकीय कार्य में बेहद आवश्यकता है क्योंकि यह बात निर्विवाद कहा जा सकता है कि चाहे कोई भी शासकीय निर्माण कार्य हो अथवा जनहितकारी योजनाओं का क्रियान्वयन, दो बातें उनकी विशिष्टता बन गई है एक तो कभी भी उनका निर्धारित समय में पूरा नही होना तथा दूसरा निर्माण कार्य में गुणवत्ता का सर्वथा अभाव। इसलिए श्री मंडावी ने शहीद पार्क तिराहा में बन रहे पुल का निरीक्षण करते हुए जब वहां मौजूद ठेकेदार और अधिकारियों को पुल निर्माण का कार्य तय समय में पूरा करने का निर्देश देने के साथ साथ यह चेतावनी भी दी कि गुणवत्ता में किसी भी प्रकार की कमी पर सख्त कार्यवाही होगी, तो सुनकर अच्छा लगा और भी अच्छी बात यह लगी कि उन्होंने केवल कहा ही नहीं बल्कि निर्माण कार्य की निगरानी के लिए लोक निर्माण विभाग के साथ मिलकर पांच सदस्यीय टीम का गठन भी किया जिनके व्दारा निर्माण कार्य की सतत निगरानी करते हुए आयुक्त को रिपोर्ट सौंपी जायगी। अवश्य ही ऐसे निगरानी दल के गठन से संबंधित लोगों पर जिम्मेदारी रहेगी जो निर्माण के समय और गुणवत्ता के बारे में जिम्मेदार और जबावदेह होगे।

यह सच्चाई किसी से छिपी नही है कि शासकीय निर्माण कार्य कभी भी तय समय में पूरे नही होते चाहे सड़क हो या पुल, भवन हो अथवा और कुछ। उसी तरह गुणवत्ता हीन निर्माण का परिणाम भी आए दिन लोगों के सामने आते रहते है। कभी निर्माणाधीन फ्लाईओवर भरभराकर गिर जाता है तो कभी पुल और कभी भवन, चाहे उसमें कितने ही लोगों की जान दांव पर क्यों न लग जाय या फिर उन्हें कितनी ही परेशानी क्यों न झेलनी पड़े। इसलिए अवश्य ही निगम आयुक्त हरेश मंडावी ने इस पुल निर्माण के कार्य पर जो रवैया अपनाया है, उसकी सराहना अवश्य ही की जानी चाहिए लेकिन यह कहना भी जरुरी है कि वास्तविक बधाई के पात्र वे तभी होगें जब जितनी इमानदारी से उन्होंने निर्देश दिए है उनका पालन भी उतनी ही जबावदेही और समर्पण के साथ हो।

भाजपा के इस दांव में खतरे भी

लेकिन क्या भाजपा इस दांव में कामयाब हो पाएगी? कई बार इस तरह के दांव उलटे पड़ते हैं। कई बार कमजोर के प्रति सहानुभूति होती है। बिहार, ओडिशा और उत्तर प्रदेश में तो डबल इंजन की डबल एंटी इन्कम्बैंसी हो सकती है। बिहार में जनता दल यू को साथ लेने के बाद भाजपा का पुरानी और छोटी सहयोगी पार्टियों से तालमेल बिगड़ा है क्योंकि उनको देने के लिए भाजपा के पास सीटें कम हैं।

दूसरी ओर विपक्षी गठबंधन की पार्टियों में बेहतर तालमेल बना है। ध्यान रहे पिछली बार किशनगंज सीट पर मुकाबला इस वजह से था कि ओवैसी की पार्टी के उम्मीदवार को करीब तीन लाख वोट मिल गए थे। इस बार ऐसा होने की संभावना बहुत कम है। इसलिए किशनगंज सीट पर कांग्रेस या विपक्षी गठबंधन के उम्मीदवार के जीतने के चांस ज्यादा हैं। इसी तरह सीमांचल की अनेक सीटों पर और पिछली बार कांटे की टक्कर वाली यादव बहुल सीटों पर भी मुकाबला आसान नहीं है।

पप्पू यादव के साथ आने से सीमांचल का गणित अलग ढंग से बन रहा है। सीमांचल में पूर्णिया से लेकर अररिया, किशनगंज, सुपौल, मधेपुरा, खगड़िया, कटिहार तक पटना में पाटलिपुत्र और मगध में जहानाबाद जैसी सीटों पर कांटे का मुकाबला है।

झारखंड में सिंहभूम सीट पर कोड़ा परिवार की मदद से भाजपा ने अपनी स्थिति मजबूत की है लेकिन यह इस बात की गारंटी नहीं है कि वह पिछली बार की तरह 14 में से 12 सीट जीत जाए। पिछली बार तीन सीटों पर कांटे की टक्कर हुई थी। लोहरदगा में कांग्रेस नौ हजार और खूंटी में डेढ़ हजार वोट से हारी थी।

दुमका में शिबू सोरेन भी 30 हजार के करीब वोट से हारे थे। इन सीटों पर इस बार भाजपा के लिए लड़ाई आसान नहीं है। इसके अलावा लहर के बावजूद पिछले दोनों चुनावों में भाजपा राजमहल सीट नहीं जीत पाई। ऐसा लग रहा है कि चार से छह सीटों पर विपक्षी गठबंधन बहुत मजबूत है।

शास्त्रीय राजनीति के नजरिए से देखें तो ओडिशा में भाजपा ने वह गलती की है, जो पंजाब में कांग्रेस और आम आदमी पार्टी ने और केरल में कांग्रेस व लेफ्ट मोर्चा ने नहीं की। ओडिशा में बीजू जनता दल और भाजपा सत्तारूढ़ व मुख्य विपक्षी पार्टी हैं। उनके साथ आ जाने से विपक्ष का पूरा स्पेस कांग्रेस के लिए खाली हो गया। पिछले लोकसभा चुनाव में कांग्रेस 13 फीसदी वोट वाली पार्टी थी, लेकिन इस बार वह बीजू जनता दल और भाजपा दोनों के खिलाफ लड़ेगी तो दोनों का विरोधी वोट उसी की ओर जाएगा।

बीजद और भाजपा का वोट पिछली बार 81 फीसदी से ऊपर था, जिसमें इस बार बड़ी कमी आएगी। अपनी लोकसभा की आठ सीटों में कुछ बढ़ोतरी के लिए भाजपा ने सत्तारूढ़ बीजद से तालमेल का फैसला किया है, जिससे विपक्ष का स्पेस एक बार कांग्रेस को मिलेगा, जो भाजपा के मुख्य विपक्षी बनने से तीसरे स्थान पर चली गई थी।

इस बीच ओडिशा के पूर्व मुख्यमंत्री और दिग्गज आदिवासी नेता गिरधर गमांग की पार्टी में वापसी हुई है तो तटीय ओडिशा के कद्दावर नेता श्रीकांत जेना भी लौटे हैं। वे तटीय ओडिशा की तीन अलग अलग सीटों से सांसद रह चुके हैं। सो, ऐसा न हो कि कांग्रेस को निपटाने का यह दांव भाजपा को भारी पड़ जाए?

उत्तर प्रदेश में भाजपा का दांव अभी चल रहा है क्योंकि वहां राममंदिर का उद्घाटन हुआ है और रामलला की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा हुई है। लेकिन वहां भी ज्यादा सीटें लड़ने की भाजपा की जिद के चलते सहयोगी पार्टियों को गिनी चुनी सीटें मिली हैं। हां, यह जरूर है कि भाजपा ने नए सहयोगी जयंत चौधरी की पार्टी रालोद के एक नेता को मंत्री बना दिया है तो सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के ओमप्रकाश राजभर को भी मंत्री बना दिया है।

भाजपा ने अपनी चार सहयोगी पार्टियों को छह सीटों में निपटाया है। रालोद और अपना दल को दो-दो तो ओमप्रकाश राजभर और संजय निषाद की पार्टी को एक-एक सीट दी गई है। इनके साथ साथ भाजपा अपना पिछड़ा नेतृतव आगे कर रही है। लेकिन दूसरी तरफ अखिलेश यादव भी यादव मोह छोड़ कर अन्य पिछड़ी जातियों को ज्यादा सीटें दे रहे हैं।

पिछली बार की तरह इस बार शिवपाल यादव की पार्टी उनको डैमेज नहीं कर रही है, बल्कि शिवपाल यादव अब साथ में हैं और लोकसभा चुनाव भी लड़ रहे हैं। बसपा प्रमुख मायावती के निष्क्रिय होने से उनका वोट बिखर रहा है, जिसका एक हिस्सा सपा और कांग्रेस के साथ जा सकता है। इस बार 20 फीसदी के करीब मुस्लिम आबादी में भी कोई कंफ्यूजन नहीं है क्योंकि कांग्रेस और सपा साथ लड़ रहे हैं। ऊपर से पार्टी का आंतरिक कलह कई मामलों में देखने को मिला है।

हरिशंकर व्यास

(ये लेखक के अपने विचार है)

श्रीनगर में मोदी ने बताई सच्चाई!

संविधान के अनुच्छेद 370 की जद से जम्मू-कश्मीर को बाहर किए जाने के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 7 मार्च को पहली बार कश्मीर घाटी पहुंचे। प्रधानमंत्री बतौर दूसरी पारी में यह उनकी पहली कश्मीर यात्रा थी। दूसरी बार सत्ता में आने के तुरंत बाद उनकी सरकार ने उस संवैधानिक प्रावधान को जम्मू-कश्मीर से हटाने की कवायद शुरू कर दी थी, जो राज्य को पीछे धकेल रहा था, उसकी प्रगति की राह में रोड़ा था।

गत 7 मार्च को पहली बार उन्होंने कश्मीर से हमें यह याद दिलाया कि अनुच्छेद 370 कश्मीर का गला घोंट रहा था। अगर राजनैतिक नज़रिए से देखा जाए तो यह याद दिलाने की लिए कश्मीर से बेहतर जगह कौन-सी हो सकती थी? यह एक महत्वपूर्ण यात्रा थी जिसमें मोदी ने कई सन्देश दिए, जुमलेबाजी भी की और अपने राजनैतिक कौशल का प्रदर्शन भी किया। उन्होंने एक बार फिर याद दिलाया कि जो नैरेटिव वे बुनते हैं, उससे ज़रा भी इधर-उधर नहीं होते।

कश्मीर को हमेशा से दुहा और बेचा जाता रहा है ङ्क राजनैतिक सन्दर्भ में, सामाजिक सन्दर्भ में, भावनात्मक और सांस्कृतिक दृष्टि से, धर्म और पहचान की नाम पर और अपनी-अपनी आपबीती के ज़रिये। वहां के रहवासियों ङ्क मुसलमानों और पंडितों ङ्क दोनों ने उसे बेचा, अपने-अपने नैरेटिव के ज़रिये।

और दोनों के नैरेटिव में दर्द है और दोनों के नैरेटिव दिल दहलाने वाले हैं। फिर कलाकारों, फोटोग्राफरों और फिल्म निर्माताओं ने कश्मीर को बेचा। उसकी कुदरती खूबसूरती और खूनखराबा, वहां की हसीन वादियाँ और हवा में तैरता डर, शांत माहौल को चीरती आहें और गुस्सा ङ्क इन सबको अगणित बार दुहा और बेचा गया।

अनुच्छेद 370 और 35ए के विशेष प्रावधानों से कश्मीरियों को कोई विशेष लाभ नहीं मिला ङ्क न आज़ादी, न गौरव, न स्वायत्ता और ना शांति और ना ही किसी लाभ की गारंटी। कश्मीर को बेच कर सबने फायदा कमाया और सबसे बड़े लाभार्थी थे राजनेता। जब राजनीति बांटने लगती है, ज़हर फैलाने लगती है तब सबसे ज्यादा कष्ट भोगते हैं आम लोग।

कश्मीर और उसके लोगों ङ्क विशेषकर उन मुसलमानों, हिन्दुओं, सिक्खों और ईसाईयों ने जो अपने घर छोड़ कर नहीं गए और जो उथलपुथल और नीरवता दोनों को झेलते हुए वहीं रहे आए ङ्क ने बहुत कुछ भोगा है और बहुत लम्बे समय तक भोगा है। शांति के दिन छोटे और कम रहे और गड़बड़ियों और बेचैनी के रातें लम्बी और ज्यादा रहीं। बल्कि बेचैनी, असंतोष और गुस्सा कश्मीर की पहचान बन गए।

सन 2019 के चुनाव में भी कश्मीर को एक राजनैतिक औजार के रूप में इस्तेमाल किया गया। कश्मीर पर लिखा गया, कश्मीर पर बोला गया, कश्मीर पर फिल्में बनीं। इन सबमें जो नैरेटिव बनाए गए उनमें भी और राजनैतिक प्रचार में भी, हिंसा छाई रही। और हिंसा ही कश्मीर का नैरेटिव बन गई। कश्मीर विलाप और विषाद की घाटी बन गई।

मगर 5 अगस्त, 2019 को इस सब पर पूर्ण विराम लगा दिया गया। नतीजा यह कि कईयों के लिए नरेन्द्र मोदी एक ऐसे व्यक्ति बन गए जो निर्णय लेना जानते है और जो निर्णय लेते है। वे एक तानाशाह नेता लगते हैं, उनके व्यवहार में दादागिरी का पुट है, नीतियों के निर्माण और उन पर अमल का उनका तरीका गैर-प्रजातान्त्रिक प्रतीत होता है और आने वाली पीढ़ियों को कदाचित उनकी विरासत उतनी शानदार नहीं लगेगी जितनी हमें अभी लगती है।

लेकिन कश्मीर के मामले में उन्होंने जो किया उसके लिए वे हमेशा याद रखे जाएंगे और 370 एक ऐसा अंक होगा जो भुलाया नहीं जा सकेगा। कश्मीर की बेड़ियाँ काट दी गईं हैं। दर्द और दहशत के नैरेटिव के सौदागरों को नये नैरेटिव ढूँढने पड़ रहे हैं। इनमें अब प्रजातंत्र के अभाव का मसला जुड़ गया है।

सन 2019 के बाद कश्मीर की मोदी की इस पहली यात्रा के राजनैतिक निहितार्थ भी हैं। आम चुनाव के पहले मोदी ने बख्शी स्टेडियम के मंच से अपना नैरेटिव देश के सामने पेश किया। वसंत की उस सुबह हवा में ठंडक तो थी मगर आसमान साफ़ था और धूप भली लग रही थी। प्रधानमंत्री ने खुलकर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि भाजपा की लिए 370 केवल एक नंबर नहीं है बल्कि एक गंभीर सोच का प्रतीक है।

वे उस नैरेटिव से ज़रा भी इधर-उधर नहीं हुए, जो नैरेटिव उन्हें ताकत देता है। चुनाव की पूर्वसंध्या पर कश्मीर के दिल से उन्होंने दरअसल कश्मीर को नहीं बल्कि भारत को संबोधित किया। उन्होंने याद दिलाया कि 2019 में उन्होंने कश्मीर के बारे में एक ऐतिहसिक और साहसिक कदम उठाया था। उन्होंने भारत को उन दीवारों की याद दिलाई जो कश्मीर और शेष भारत के बीच तामीर कर दी गईं थीं। उन्होंने कश्मीर के पुराने राजनीतिज्ञों की गन्दी करतूतों की याद दिलाई जिन्होंने कश्मीर को इंसानियत, जम्हूरियत और कश्मीरियत से जुदा कर दिया था।

उन्होंने भारत को याद दिलाया कि उसी वेदना में से कमल खिला है। उन्होंने भारत को याद दिलाया कि कश्मीर को अब एक नई राजनीति आकार दे रही है जो कश्मीर के लोगों को देश की अन्य हिस्सों के लोगों से जोड़ रही है। उन्होंने भारत को याद दिलाया कि 'विकसित भारत' के उनके मिशन का कश्मीर एक आवश्यक हिस्सा है और वह उसमें एक आवश्यक भूमिका निभाएगा। इसके पहले कि मैं नरेन्द्र मोदी की 'नई राजनीति' के पीछे की राजनीति की बात करूं और उनके नैरेटिव पर आऊं, थोड़ी चर्चा नए जम्मू-कश्मीर की।

श्रुति व्यास

(ये लेखक के अपने विचार है)

राज-काज

हद में रहें ओटीटी प्लेटफार्म

आपत्तिजनक कंटेंट को लेकर सरकार ने बड़ा कदम उठाया है। लगातार चेतावनियों के बावजूद अश्लील सामग्री दिखाने पर अठारह ओटीटी प्लेटफार्म्स को बैन कर दिया है। यह कदम सूचना व प्रसारण मंत्रालय द्वारा उठाया गया। इसके साथ ही उन्नीस वेबसाइट्स, दस एप व 57 सोशल मीडिया हैंडल्स को भी ब्लॉक किया गया है। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा, इन प्लेटफॉर्म्स को रचनात्मक अभिव्यक्ति के नाम पर अश्लीलता फैलाने के लिए चेतावनी दी गई थी, जिसे लेकर सरकार ने कड़ी कार्रवाई करते हुए अंततः देश भर में पाबंदी लगा दी। इस कार्रवाई के तहत फेसबुक पर 12, इंस्टाग्राम पर 17, एक्स पर 16 अकाउंट समेत यूट्यूब के 12 अकाउंट्स पर भी पाबंदी लगाई गई है। दुनिया भर की सरकारें अपने यहां समय-समय पर इंटरनेट पर सख्ती करती रहती हैं। चीन, उत्तर कोरिया, ईरान, तुर्किए जैसे देशों में फेसबुक, ट्वीटर तथा यूटयूब जैसे प्लेटफॉर्म्स पर पाबंदियां लगाने के लिए बुरी तरह बदनाम हैं। कुछ समय पहले भी भारत सरकार द्वारा 58 मोबाइल एप्स पर भी पाबंदी लगाई जा चुकी है। यह सच है कि स्क्रीन पर अश्लील कंटेट की बहुतायत है। सरकार की यह नैतिक जिम्मेदारी है कि वह ऐसे प्लेटफार्म्स को हिदायत दे। बावजूद इसके यदि वे अपनी स्थिति स्पष्ट करने में असफल होते हैं या चेतावनियों की अनदेखी करते हैं तो उन पर सख्त कार्रवाई करने में संकोच नहीं करना चाहिए, परंतु जैसे कि यह चुनावी वर्ष है, जिसे देखते हुए सरकार पर यह आरोप लगना लाजमी है कि उस पर कीचड़ उछालने वाले कंटेंट या कार्यक्रमों की पहुंच को सीमित रखने के उद्देश्य से यह कदम उठाया गया। इंटरनेट के जमाने में अश्लीलता को रोकना किसी भी सिस्टम के हाथ में नहीं रहा है। यहां सब कुछ खुलेआम नजर आ रहा है। रचनात्मकता पर अंकुश लगाना कतई उचित नहीं ठहराया जा सकता।

तेलुगू देशम पार्टी फिर एनडीए में

आंध्र प्रदेश में विधानसभा और लोक सभा के चुनाव भाजपा, तेलुगू देशम पार्टी (तेदेपा) और जनसेना पार्टी (जेएसपी) मिलकर लड़ेंगे।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से लगातार दूसरे दिन बैठक करने के उपरांत तीनों दलों ने संयुक्त बयान जारी करके इस बाबत जानकारी दी। इस प्रकार एनडीए परिवार में दो और दल शामिल हो गए हैं, और तीनों जल्द ही सीट शेयरिंग के तौर-तरीकों को लेकर बातचीत करेंगे। दरअसल, भाजपा दक्षिण भारत में ज्यादा से ज्यादा लोक सभा सीटें जीतने की रणनीति पर गहन मंथन करती रही है। अपनी इसी रणनीति के तहत उसने आंध्र प्रदेश की एक बड़ी पार्टी तेदेपा और बनिस्बत एक छोटे दल को साथ लेकर बढ़ने का फैसला किया है। वैसे, तेदेपा और भाजपा का रिश्ता कोई नया नहीं हैं, दोनों पार्टियों के बीच रिश्ता काफी पुराना है। तेदेपा राजग 1996 में शामिल हुई थी। अटलबिहारी वाजपेयी और नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकारों में सफलतापूर्वक काम कर चुकी है। तेदेपा और भाजपा ने 2014 का लोक सभा और विधानसभा चुनाव साथ लड़ा था जबकि जनसेना पार्टी ने 2014 के आम चुनाव और विधानसभा चुनाव में भाजपा का समर्थन किया था। जेएसपी के अध्यक्ष पवन कल्याण हैं, और इस पार्टी के राज्य के कुछ पॉकेट्स में प्रभाव माना जाता है। तेदेपा का राजग में शामिल होने को लेकर पहले से कोई संशय नहीं था, और माना जा रहा था कि तेदेपा का राजग में शामिल होने की घोषणा कुछ ही दिनों की बात है। आंध्र प्रदेश में सत्तारूढ़ वाईएसआर कांग्रेस का मुकाबला करने के लिए उसके लिए जरूरी है कि वह राजग का हिस्सा बने ताकि वाईएसआर का मजबूती से मुकाबला कर सके। पता चला है कि तेदेपा लोक सभा की 17 सीटों और विधानसभा की 145 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। भाजपा और जेएसपी लोक सभा की 8 सीटों और विधानसभा की 30 सीटों पर चुनाव लड़ सकती हैं।

सुडोकू पहेली

क्रमांक- 5322

	4			1				9
	7			6		1		
1	6	3	9					8
	3					2		
	5		7		2		1	
		6					3	
6					5	8	9	2
		5		2			6	
9				8			4	

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5321

6	9	5	4	7	3	2	1	8
7	3	4	8	2	1	5	6	9
2	8	1	6	9	5	7	3	4
8	1	2	5	3	9	4	7	6
4	6	7	2	1	8	9	5	3
3	5	9	7	6	4	8	2	1
1	7	3	9	4	2	6	8	5
9	2	8	1	5	6	3	4	7
5	4	6	3	8	7	1	9	2

वर्ग पहेली 5322

1	2		3	4		5	■
6		■	7		■	8	9
10		11	■	■	12		
■	■	13	14	15		■	■
16	■	17	■		■	■	18
19	20		■	21	22		
■	23		■	24		■	
24		■	■	■	26		

संकेत: बाएं से दाएं

1. 06 1861 को हमारे प्रथम प्रधानमंत्री के पिता ने जन्म लिया इनका निधन 6 फरवरी 1931 को हुआ था (7)
6. उपकार, कल्याण, भलाई (2)
7. घात, अवसर की प्रतीक्षा (2)
8. अधिक, अनेक (2)
10. शब्दरहित, शब्द न करने वाला (3)
12. जो सही न हो, यथार्थता से परे (3)
13. नैतिक आचरण और व्यवहार वाला (4)
17. शपथ, हलफ, सौगंध (2)
19. गाय (2)
21. कारावास, बंदीगृह (4)
23. अनुचर वर्ग, दूत, समूह (2)
24. हैसियत, औकात, परत (2)
25. यह पश्चिमी अफ्रीका का ऐसा देश है जिसका कोई भी भाग समुद्र से नहीं मिला है, बाग-बगीचे की देखभाल करने वाला (3)
26. तुच्छ और हीन (3)

ऊपर से नीचे

1. भगवान विष्णु का एक स्त्री रूप जो अमृत बांटते समय उन्होंने धारण किया था (3)
2. मुर्गे की जाति का एक प्रसिद्ध पक्षी (3)
3. कोमल कांड, सुंदर स्त्री (2)
4. भला, उम्दा, उत्तम (2)
5. यह मुद्रा रूस देश में प्रचलित है (3)
9. आहुति के रूप में दिया हुआ, पूर्ण समर्पण किया हुआ (2)
11. किसी को वश में लाने की क्रिया (5)
12. बंदूक (अंग्रेजी)(2)
14. चिपकने के गुण, चिपकाने वाली चीज (2)
15. बायां हाथ (4)
16. बड़ी बहन या जीजी को उर्दू में यह कहते है (2)
18. उत्तर भारत में बहने वाली एक सदानीरा नदी इसका पौराणिक नाम शतलु है (4)
20. क्रिकेट में गेंदबाजी की एक तकनीक (3)
22. उत्सर्ग करना, न्यौछावर करना (3)

वर्ग पहेली 5321 का हल

झा	नी	जै	ल	सिं	ह	■	बा
त	म	■	ग	ह	रा	■	रू
■	न	य	न	■	र	सी	द
सा	■	हू	■	व	त	न	■
म	■	दी	वा	र	■	■	■
वे	श	■	म	दा	र	■	अ
द	■	वि	न	य	■	प	ट
■	अं	शव	■	क	■	द	ल